संस्कृति एवं व्यक्तित्व
(Culture and Personality)

व्यक्तित्व का सामान्य अर्थ व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक लक्षणों का कुल योग होता है, जिसके कारण प्रत्येक व्यक्तित्व एक दूसरे से समान या एक दूसरे से स्वतन्त्र भिन्न होता है। मैकाइवर एवं पेज के अनुसार — "व्यक्तित्व एक व्यक्ति की आदतों, मनोवृत्तियों, लक्षणों तथा विचारों का ऐसा संगठित योग है जो स्वतंत्र स्तर पर विशिष्ट एवं सामान्य परिस्थितियों एवं स्थिति के रूप में तथा आन्तरिक रूप में उसकी आत्मचेतना या अहम् की धारणा, मूल्यों तथा उद्देश्यों की ओर संगठित होता है।"

इगर के अनुसार :—

"व्यक्तित्व एक व्यक्ति के ऐसे व्यवहार का समग्र है, जिसके अन्तर्गत प्रदत्त प्रवृत्तियों की पद्धति परिस्थितियों का एक सिलसिला के साथ अन्तः क्रिया होती है।"

इस परिभाषा से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति किसी खास परिस्थिति में हमेशा एक निश्चित ढंग से व्यवहार करता है।

समाजशास्त्र और मानवशास्त्र के क्षेत्र में यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि संस्कृति पर व्यक्तित्व का बहुत ही गहरा प्रभाव होता है। एक ही परिस्थिति में विभिन्न धर्मों एवं समुदायों के लोग विभिन्न प्रकार से आचरण करते हैं, जिसके पीछे यदि कोई सबसे प्रमुख कारण है, तो वह है सांस्कृतिक विभिन्नता। प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व में उसकी संस्कृति का प्रभाव आसानी से देखा जा सकता है, लेकिन इससे यह नहीं समझना चाहिए कि व्यक्तित्व का विकास मात्र संस्कृति के ही प्रभाव में होता है। अन्य कारकों की